मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग की अधिसूचना क्रमांक एफ 46-9/99/सी-3/20, भोपाल दिनांक 14 जून 1999 के अनुसार चुनी हुई शासकीय माध्यमिक शालाओं में प्रयोगात्मक रूप से प्रचलन हेतु अनुमोदित एवं निर्धारित।

मानचित्र के आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।

द्वितीय संस्करण (संशोधित)

प्रथम मुद्रण 1994

द्वितीय मुद्रण 1996

तृतीय मुद्रण 1999

आवरण चित्र 'देश का पर्यावरण' से साभार

मध्यप्रदेश पाठयपुस्तक निगम की ओर से एवं उनके लिए राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स द्वारा मुद्रित।

सामाजिक अध्ययन

कक्षा आठ

(प्रायोगिक संस्करण)

मध्य प्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल

1999

आपस की बात

मध्य प्रदेश की माध्यमिक शालाओं में विज्ञान शिक्षण में नवाचार करने के प्रयास 1972 में दो स्वयं सेवी संस्थाओं (किशोर भारती, बनखेड़ी व मित्र मंडल केंद्र, रसूलिया) द्वारा होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से शुरू हुए थे। इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए शालाओं में नए परिप्रेक्ष्य से सामाजिक अध्ययन, भाषा व गणित सीखने-सिखाने की तैयारी एक अगला चरण थी। 'एकलव्य' संस्था इसी उद्देश्य से बनी और लगभग 1982 से ही ये तैयारियां शुरू हो चुकी थी।

1986-87 में, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से, माध्यमिक शालाओं के लिए एकलव्य द्वारा विकसित सामाजिक अध्ययन की प्रायोगिक पाठ्य सामग्री 3 जिलों की 9 माध्यमिक शालाओं की कक्षा 6 में लागू की गई। साल भर के प्रयोग और विवेचना के आधार पर, इस सामग्री को 1987-88 में संशोधित कर फिर से छापा गया। साथ ही कक्षा 7 के लिए प्रायोगिक पाठ तैयार किए गए। 1988-89 में कक्षा 7 की सामग्री का संशोधन किया गया और कक्षा 8 के लिए प्रायोगिक पाठ तैयार किए गए।

इस काम को आगे बढ़ाते हुए 1988 से 1990 तक कक्षा 8 के प्रायोगिक पाठ पढ़ाए गए। स्कूल के बच्चों व शिक्षकों की भागीदारी से, इन पाठों की कमियां व खूबियां उभर कर आईं। रुचि रखने वाले कई लोगों ने भी इन पाठों की समीक्षा की। इस क्रम में पुस्तक के पाठ बदले गए, सुधारे गए और कुछ पाठ जो आठवीं के बच्चों के लिए उचित नहीं लगे, वे हटा ही दिए गए। इन के बदले में कुछ नए पाठ जोड़े गए। इस प्रयत्न के परिणामस्वरूप कक्षा 8 की प्रायोगिक पुस्तक का यह संशोधित संस्करण तैयार हुआ।

1989 व 1990 में इन पुस्तकों को पढ़कर कक्षा 8 के बच्चों ने बोर्ड परीक्षा दी। मूल्यांकन के दौरान भी ऐसी बहुत सी जानकारी मिली जिससे पाठों के संशोधन में मदद मिली।

पाठ्य सामग्री के अलावा परीक्षा प्रणाली में भी संशोधन किए गए। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है 'खुली पुस्तक परीक्षा', जिसमें परीक्षा में पुस्तक ले जाने की अनुमति है। सामाजिक अध्ययन में ऐसा प्रयोग स्कूली स्तर पर पहली बार किया गया है। अतः ऐसी परीक्षा के उद्देश्य और स्वरूप के बारे में भी कुछ कहना ज़रूरी है।

सामाजिक अध्ययन के संदर्भ में खुली पुस्तक परीक्षा के दो मुख्य उद्देश्य हैं। पहला, संदर्भ से (पाठ, नक्शे, तालिका आदि) उत्तर ढूंढ़ पाना और दूसरा, पाठ या कई पाठों में दी गई जानकारी को समझकर अपने शब्दों में उत्तर लिख पाना। आशा है कि ऐसी परीक्षा से बहुत सारी जानकारी याद करने का बोझ बच्चों पर से हट जाएगा।

हमारा विश्वास है कि शिक्षा का कोई भी सार्थक कार्यक्रम शिक्षकों, बच्चों व स्रोत व्यक्तियों के संयुक्त प्रयासों से ही उभर सकता है। कक्षा 6, 7 व 8 की पुस्तकों के दूसरे संस्करण इसी प्रयास के एक चरण हैं। स्कूल के अनेकानेक अनुभवों और रुचि रखने वाले लोगों की भागीदारी से ही ये पाठ धीरे-धीरे अंतिम स्वरूप लेंगे।

शिक्षा में नवाचार केवल पुस्तक छापने तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण, अनुवर्तन, फीडबैक, मूल्यांकन, परीक्षा तथा प्रशासन, इन सबका इकट्ठा बदलना ज़रूरी है। यह प्रायोगिक पुस्तक तो इस पूरी प्रक्रिया का अंशमात्र है। सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का यह पूरा विषम काम अब ज़ोर पकड़ने लगा है। निस्संदेह यह काम आप सब के सहयोग से ही आगे बढ़ पाएगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से यह कार्यक्रम प्रयोग के रूप में मध्य प्रदेश की 9 शालाओं में चलाया जा रहा है। कक्षा 6 व 7 की पुस्तक की तरह कक्षा 8 की पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन का दायित्व भी मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम ने उठाया है।

आज सारे देश में शिक्षा को एक नया मोड़ देने की गहन चर्चा हो रही है। हमें आशा है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा में नवाचार का प्रयास करने की ये पहल उस दिशा में एक ठोस कदम साबित होगी।

एकलव्य ग्रुप,
1994.

पाठ्य सामग्री तैयार करने में डॉ. अम्बेडकर संस्थान, महू; सागर विश्वविद्यालय; दिल्ली विश्वविद्यालय; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली; पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ; इंदिरा गांधी शोध संस्थान, बंबई; क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल; स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खंडवा; बे ऑफ बंगाल प्रोजेक्ट (कृषि एवं खाद्य संगठन) मद्रास; ज़ेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन, बम्बई; परासिया के खदान मजदूर; वैस्टर्न कोल फील्ड्स, परासिया; इंस्टिट्यूट ऑफ डिवलपमेंट स्टडीज़, जयपुर; राजस्थान विश्वविद्यालय; मद्रास के मछुआरे; मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ डिवलपमेंट स्टडीज़, मद्रास और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के साथियों का विशेष सहयोग मिला।

चित्रांकन में सहयोग दिया है धनंजय खिरवड़कर (हरदा), श्री सावरकर, विवेक, राघवेंद्र (भोपाल), ए.आर. शेख (देवास), राजेश यादव (इटारसी) और कैरन ने।

फोटोग्राफ हमने कई पुस्तकों और स्रोतों से लिए हैं। इनमें से हरएक का उल्लेख करना संभव नहीं है। इन सभी के हम आभारी हैं।

इतिहास

1.	मुग़ल बादशाह अकबर	3
2.	मुग़ल साम्राज्य के अमीर	15
3.	मुग़ल काल के गांव	25
4.	बादशाह औरंगज़ेब का समय	38
5.	मुग़ल काल में विदेशी व्यापार की दुनिया	45
6.	भारत में अंग्रेज़ों का राज्य बना	54
7.	नए विचार और समाज सुधार की कोशिश	63
8.	अंग्रेज़ी शासन और भारत के किसान	76
9.	अंग्रेज़ों के शासन में जंगल और आदिवासी	85
10.	अंग्रेज़ शासन में उद्योग और मज़दूर	99
11.	मध्यम वर्ग के लोग और अंग्रेज़ी शासन	111
12.	भारत का राष्ट्रीय आंदोलन	116

नागरिक शास्त्र

1.	बैंक	127
2.	टैक्स	138
3.	सरकार	148
4.	हमारा संविधान	160
5.	हमारे मौलिक अधिकार	164
6.	विकास के लिए योजनाएं	171
7.	भारत सरकार की कृषि नीति	173
8.	बुनियादी उद्योग की नीति	180
9.	ग़रीबी और उसे दूर करने की योजनाएं	188

भूगोल

1.	गर्मी और तापमान	196
2.	उत्तरी अमेरिका का महाद्वीप की प्राकृतिक बनावट एवं जलवायु	206
3.	अमेरिका महाद्वीप में यूरोपीय लोगों का आना और बसना	215
4.	ग्रेट प्लेस	227
5.	संयुक्त राज्य अमेरिका में उद्योग	237
6.	भारत देश	246
7.	हिमालय पर्वत	262
8.	दकन का पठार	282
9.	तटीय मैदान और समुद्री तट	294
10.	उत्तर का मैदान	306
11.	राजस्थान का मरुस्थल	315